INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 03 | January – March 2018

सोशल मीडिया की सामाजिक वास्तविकता

सन्दीप, पीएच.डी. रिसर्च स्कॉलर
समाजशास्त्र , ओ० पी० जे० एस० विश्वविद्यालय, चुरू (राजस्थान)

सारांश

वर्तमान में सोशल मीडिया ने जनसंचार को एक नया आयाम दिया है, जिसके कारण तेजी के साथ सूचनाओं और विचारों का प्रसार सम्भव हो रहा है, किसी भी वीडियों या तस्वीर को करोड़ों लोगों तक पहुँचाने की क्षमता सोशल मीडिया में है, लोगों तक पहुँच ही इसकी सबसे बड़ी ताकत है। इसी ताकत ने इसे वर्चुअल दूनिया में मौजूद लोगों के लिए सोशल मीडिया के उपयोग को अनिवार्य सा बना दिया है।

आज का दौर सोशल मीडिया का है। प्रत्येक आयु वर्ग के लोगों में सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति उत्साह दिन–ब–दिन बढ़ता जा रहा है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स संचार व सूचना का सशक्त जरिया है, जिनके माध्यम से लोग अपनी बात बिना किसी रूकावट के रख सकते है। लोगों द्वारा रखी हुई बात देश और दुनिया के प्रत्येक कोने तक पहुँच जाती है। सोशल मीडिया के माध्यम से खुद के विचार रखने के साथ–साथ दूसरों की बातों पर खुलकर अपनी राय भी व्यक्त कर पाते हैं।

एक परिभाषा के अनुसार, ''सोशल मीडिया परस्पर संवाद का वेब आधारित एक ऐसा अत्याधिक गतिशील मंच कहा जा सकता, जिसके माध्यम से लोग संवाद करते हे और आपसी जानकारियों का आदान–प्रदान करते है और उपयोगकर्ता जनित सामग्री को सामग्री की सहयोगात्मक प्रक्रिया के अंश के रूप में संशोधित करते हैं।''

अगर हम सोशल मीडिया की वास्तविकता की बात करें तो हमें इसके दोनों पक्ष सकारात्मक और नकारात्मक पर विचार करना होगा। केवल एक पक्ष के माध्यम से सोशल मीडिया सामाजिक वास्तविकता का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

सोशल मीडिया और इसकी शुरूआतः

सोशल मीडिया एक ऐसा मीडिया है, जो बाकी सारे मीडिया (प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और समानांतर मीडिया) से अलग है। सोशल मीडिया इंटरनेट के माध्यम से एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है जिसे उपयोग करने वाला व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी प्लेटफॉर्म (फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम) इत्यादि का उपयोग कर पहुंच बना सकता है।

आज के दौर में सोशल मीडिया जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है। जिसके बहुत सारे फीचर हैं, जैसे कि सूचनाएं प्रदान करना, मनोरंजन और शिक्षित करना मुख्य रूप से शामिल है। दूनिया के भिन्न–भिन्न देशों में लोग अपनी सुविधा के अनुसार इन सोशल साइट्स का इस्तेमाल कर रहे है। नब्बे के दशक में पहली बार सोशल मीडिया की चर्चा हुई, जब वर्ष 1994 में सबसे पहला सोशल मीडिया जीओसाइट के रूप में लोगों के सामने आया, तो इसका उद्देश्य एक ऐसी वेबसाइट बनाना था, जिसके माध्यम से लोग अपनी बातचीत एवं विचार सांझा कर सके। आरम्भिक दौर में इसे मात्र शहरों में इस्तेमाल हेतु बनाया गया था पर आज यह पूरे विश्व में लोकप्रिय हो चला है।

आज फेसबुक टिवटर, गूगल प्लस, माय स्पेस, व्हटसएप जैसी तमाम सोशल साइट्स दुनिया को एक सूत्र में बांध रही है। अब तो भिन्न भिन्न वर्ग के लोग भी अपने विचारों को सांझा करने के लिए सोशल साइट्स का निर्माण करने लगे है। मसलन 'मवसलिम' दूनियाभर के मुस्लिम समुदाय के बीच तो 'रिसर्चगेट'

दूनिया भर के वैज्ञानिकों के बीच लोकप्रिय है। यही कारण है आज फेसबुक पर आम आदमी ही नहीं विशिष्ट लोग भी सक्रिय है। राजनीति, फिल्म जगत, साहित्य, कला, अर्थ, मीडिया, कॉर्पोरेट जगत से लेकर सरकारी सेवाओं में पदस्थ एवं सैन्य अधिकारी भी फेसबुक पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे है। ऐसे लोग जो अपनी मन की बात कहने के लिए उचित मंच नहीं पाते, वे इन्हीं सोशल साइट्स पर खूब लिख पढ रहे है।

सोशल मीडिया की सामाजिक वास्तविकताः

सोशल मीडिया को वास्तविकता को जानने के लिए जैसा कि पहले भी बताया गया है कि इसको दोनों पक्षों का मूल्यांकन करना होगा तभी हम इसकी वास्तविकता को जान पाएंगे। सोशल मीडिया सकारात्मक भूमिका अदा करता है। जिससे किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह, और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है। सोशल मीडिया के जरिए ऐसे कई विकासात्मक कार्य हुए है। जिनसे की लोकतन्त्र को समृद्ध बनाने का काम हुआ है। जिससे किसी भी देश की एकता, अखंडता, पंथनिरपेक्षता, समाजवादी गुणों में वृद्धि हुई है। हम ऐसे कई उदाहरण देखते है, जोकि उपरोक्त बातों को पुष्ट करते हैं जिनमें प्दकपं ।हंपदेज ब्वततनचजपवद को देख सकते है, जोकि भ्रष्टाचार के खिलाफ महाअभियान था जिसे सड़कों के साथ–2 सोशल मीडिया पर भी लड़ा गया। जिसके कारण विशाल जनसमूह अन्ना हजारे के आन्दोलन से जुड़ा ओर उसे प्रभावशाली बनाया।

2014 और 2019 के आम चुनावों के दौरान राजनीतिक पार्टियों ने जमकर सोशल मीडिया का उपयोग कर आमजन को चुनाव के प्रति जागरूक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस आम चुनाव में सोशल मीडिया के उपयोग से वोटिंग प्रतिशत बढ़ा साथ ही साथ युवाओं में चुनाव के प्रति जागरूकता बढ़ी। सोशल मीडिया के माध्यम से ही 'निर्भया' को न्याय दिलाने के लिए विशाल संख्या में युवा सड़कों पर आ गए जिससे सरकार दबाव में आकर एक नया एवं प्रभावशाली कानून बनाने को मजबूर हो गई और इसी कानून के चलते 20 मार्च 2020 को 7 वर्ष के इंतजार के बाद आखिरकार निर्भया को इन्साफ मिल सका और उन सभी दरिंदों को सजा दी गई।

लोकप्रियता के प्रसार में सोशल मीडिया एक बेहतरीन प्लेटफार्म है जहां व्यक्ति स्वयं अथवा अपने किसी उत्पाद को ज्यादा लोकप्रिय बना सकता है। आज फिल्मों के ट्रेलर टीवी प्रोग्राम का प्रसारण भी सोशल मीडिया के माध्यम से किया जा रहा है। वीडियो तथा ऑडियो चैट भी सोशल मीडिया के माध्यम से ही सुगम हो पाई है। जिसमें फेसबुक, व्हटसऐप, इंस्टाग्राम कुछ प्रमुख प्लेटफार्म है।

जहाँ सोशल मीडिया, सकारात्मक भूमिका अदा करता है। वहीं कुछ लोग इसका गलत उपयोग भी करते है। सोशल मीडिया का गलत तरीके से उपयोग कर ऐसे लोग दुर्भावनाएं फैलाकर लोगों को बांटने की कोशिश करते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से भ्रामक एवं नकारात्मक जानकारी सांझा की जाती है। जिससे कि जनसंख्या पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हैं।

कई बार तो बात इतनी बढ़ जाती है कि सरकार सोशल मीडिया को गलत इस्तेमाल करने पर सख्त हो जाती है हमने देखा है कि सरकार को जम्मू कश्मीर जैसे राज्यों में सोशल मीडिया पर प्रतिबन्ध तक लगाना पड़ता है। मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में हुए किसान आन्दोलन एवं हरियाणा में हुए जाट आरक्षण आन्दोलन में भी सरकार द्वारा सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगा दिया गया था ताकि असामाजिक तत्व इन आन्दोलनों की आड़ में किसी बड़ी घटना को अंजाम ना दे पाएं। जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते है, ठीक उसी प्रकार सोशल मीडिया के दो पक्ष है। इसके अलावा भी सोशल मीडिया पर बहुत सारे नकारात्मक पक्ष सामने आते है। पिछले वर्ष मेरठ में हुई एक घटना ने सामाजिक मीडिया के खतरनाक पक्ष को उजागर किया है। वाक्या यह हुआ था कि एक किशोर ने फेसबुक पर एक ऐसी तस्वीर अपलोड कर दी जो बेहद ही आपतिजनक थी, इस तस्वीर के अपलोड होते है कुछ घंटों की भीतर ही एक समुदाय के सैकड़ों गुस्साये लोग

सड़कों पर उतर गए। जब तक प्रशासन समझ पाता की माजरा क्या है? मेरठ में दंगे के हालात बन गए। प्रशासन ने हालात की बिगडने नहीं दिया एवं जल्द ही अपलोड करने वाले लड़के तक भी पहुंच गया। लोगों का मानना है कि परंपरिक मीडिया के आपत्तिजनक व्यवहार की तुलना में नए सामाजिक मीडिया के इस युग का आपत्तिजनक व्यवहार कई मायने में अलग है। नए सामाजिक मीडिया के माध्यम से यहाँ गड़बड़ी आसानी से फैलाई जा सकती है, वहीं लगभग गुमनाम रह कर इस कार्य को अंजाम दिया जा सकता है। हालांकि यह सच नहीं है। अगर कोशिश की जाएं तो सोशल मीडिया आपत्तिजनक व्यवहार करने वालों को रोका जा सकता है और ऐस स्वार्थी तत्वों को पकड़ा जा सकता है। इस तरह का मामला केवल मेरठ तक ही नहीं है। इस तरह के बहुत से उदाहरण समाज में मिल जाते है।

सोशल मीडिया की आलोचना उसके विज्ञापनों के लिए भी की जाती है। इस पर मौजूद विज्ञापनों की भरमार उपभोक्ता को दिग्भ्रमित कर देती है। ऐसे सोशल मीडिया संगठन एक इतर संगठन के रूप में कार्य करते है तथा विज्ञापनों की किसी बात की जवाबदेही नहीं लेते है जोकि बहुत ही समस्यापूर्ण है।

जैसा कि हम पहले भी बता चुके है कि सोशल मीडिया, एक तरह से दुनिया के विभिन्न कोनों में बैठे उन लोगों से संवाद जिनके पास इंटरनेट को सुविधा है। इसके जरिए ऐसा औजार पूरी दुनिया के लोगों के हाथ लगा है, जिसके जरिए वे न सिर्फ अपनी बातों को दुनिया के सामने रखते है, बल्कि वे दूसरों की बातों सहित दूनिया की तमाम घटनाओं से भी अवगत होते हैं। यहां तक कि सेल्फी सहित तमाम घटनाओं की तस्वीर भी लोगों के साथ शेयर करते है। इतना ही नही यूजर हजारों हजार लोगों तक अपनी बात सिर्फ एक क्लिक की सहायता से पहुंचा सकते है। अब तो सोशल मीडिया सामान्य सम्पर्क, संवाद या मनोरंजन से इतर नौकरी ढूँढने, उत्पादों या लेखन के प्रचार–प्रसार में भी सहायता करता है। सामाजिक मीडिया के व्यापक विस्तार के साथ–साथ इसके सकारात्मक पक्ष भी सामने आते रहते है।

सोशल मीडिया के माध्यम से हजारों लोग आपस में एक–दूसरे से जुड़ गए हैं। एक ऐसा मित्र जो आपसे कई वर्षों से न मिला हो फेसबुक के माध्यम से वह पलभर में आपके सम्पर्क में आ जाता है। कोई अपना जिसे आप ढूंढना चाहते है वह हो सकता है कि इस मीडिया पर आपसे टकरा जाये। सोशल मीडिया पर हम अपने विचार किसी भी विषय पर हम अपने मित्रों तक रख सकते है और वाहवाही लूट सकते हैं। आप फोटोग्राफ, संदेश, वीडियों आदि भी शेयर कर सकते हैं। कोई अभियान चलाकर आप जनता एवं मित्रों की राय जान सकते हैं। सरकारी एजेंसी या कई अभियान जैसे मतदान प्रचार में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से इस माध्यम का लाभ ले रही है। लोकतन्त्र के विकास में सोशल मीडिया कारगर सिद्ध हो रहा है। कई राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि जनता को अपने द्वारा कराये गए विकास कार्यों की जानकारी इस पर सांझा कर रहे हैं। जनता तक सब जानकारी सीधे पहुंच रही हैं। यह सोशल मीडिया का फायदा ही है कि कोई भी विषय सोशल मीडिया में चर्चित होते ही सरकारी अथवा गैर–सरकारी संस्था उसको संज्ञान में लेती है। अपनों से संवाद करने पर एक मानसिक संतोष मिलता है कि जो हमसे दूर हैं वे इतने दूर भी नहीं है। यह सोशल मीडिया का फायदा ही है।

सोशल मीडिया पर अनेक तरह के लोग एवं संगठन सक्रिय हैं बहुत से लोग इसका गलत इस्तेमाल भी करते हैं। आपके बारे में कुछ जानकारी जुटा कर उसका इस्तेमाल आपकी छवि को खराब करने के लिए करते है। सोशल मीडिया का ज्यादा इस्तेमाल करना आपके एवं आपके साथी के बीच आशकाएं भी पैदा कर देता है। आजकल सोशल मीडिया पर ऐसा भी देखा जा रहा है कि किसी के फोटोग्राफर को सॉफ्टवेयर के माध्यम से उसमें बदलाव करके उसका दुष्प्रचार भी किया जाता है। यहाँ पर कभी भी ऐसे मित्र ना बनाएं जिनको आप जानते ही नही है। उनकी यह प्रोफाइल फर्जी भी हो सकती है जो आपको नुकसान पहुंचा सकती है। सोशल नेटवर्किंग सर्विस फेसबुक के अनुसार काफी बड़ी संख्या में प्रोफाइल फेसबुक पर फर्जी है।

सोशल मीडिया आभासी दुनिया का नेटवर्क है यह असल जीवन या जिंदगी के नेटवर्क का विकल्प नहीं है इसको भी हमें समझना पड़ेगा। इस नए मीडिया ने संवादहीनता खत्म तो की है लेकिन असफल जिंदगी के रिश्तों जिसमें आपके दोस्त, आपके पड़ोसी, आपके रिश्तेदार जो जरूरत पड़ने पर आपके काम आते थे उनको भी कहीं ना कहीं आपसे दूर किया है। उनको आप अब उतना समय नहीं दे पाते जितना पहले दे पाते थे।

नकारात्मक एवं सकारात्मक सोच के लोग इसी समाज में रहते है सोशल मीडिया का प्रयोग किस सोच के साथ एवं कैसे करना है ये हमें ही सोचना है। इतना जरूर है कि हमें इसमें थोडी सावधानी जरूर बरतनी होगी सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते वक्त।

आज मीडिया के सामने ज्ज्ञ एक बहुत बड़ी चुनौती बनी हुई है। संविधान का चौथा स्तंभ कहीं जाने वाली मीडिया की सोच आखिरकार इतनी छोटी कैसे हो गई? अगर दूनिया भर के इस्लामिक देशों की मीडिया पर एक नजर डालें तो पता चलता है कि किसी और चीज में ना सही लेकिन मनमानी करने में भारतीय मीडिया सबसे आगे है। बेसक इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि मीडिया के जरिए राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था में पारदर्शिता आई है, राइट टू इन्फोमेशन, राइट टू एजूकेशन जैसे अधिकार भारतीयों के हित को ध्यान में रखते हुए लागू हुए। काले धन और देश में दिन प्रतिदिन बढ़ते भ्रष्टाचार के खिलाफ एक सशक्त मुहिम चलाने में मीडिया का योगदान मील का पत्थर साबित हो रहा है। सत्ता के फेरबदल में भी सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता । लेकिन जैसे–जैसे मीडिया की स्वतंत्रता बढ़ रही है वैसे–वैसे इसके दायरे भी बढ़ते जा रहे है।

जैसे सोशल नेटवर्किंग साइट ने मीडिया के ढाँचे को ही बदल दिया है। बदल गए वो दिन जब जनता खबरों के लिए सुबह और शाम के समाचार पर निर्भर रहती थी सोशल नेटवर्किंग साइट के जरिए आज मीडिया और ऑडियंस के बीच का दायरा काफी कम हो गया है। लेकिन सवाल उठता है कि दिन ब दिन कम होता दायर समाज के लिए कितना खरतनाक या फायदेमंद साबित हो सकता है। कहीं ऐसा तो नहीं इस कम होते दायरे की आढ़ में मीडिया अपनी कोताही को छुपाने की कोशिश कर रही है। अफवाहें के कारण अनेक राज्यों की जनता में फैली अफरातफरी ने सोशल मीडिया के गैर जिम्मेदार रवैये को उजागर कर दिया है। हजारों की संख्या में लोग अपना घरबार छोडकर पलायन करने पर मजबूर हो गए है।

इस घटना से यह सिद्ध हो गया है कि सोशल मीडिया के इस तरह के गैरजिम्मेवार रवैये पर लगाम लगाना कितना जरूरी हो गया है। मीडिया के आधुनिकीकरण में प्रचार या दुष्प्रचार का अंतर कहीं खो सा गया है। यहाँ एक तरफ खबर और सूचना के प्रति लोगों की बुद्धिजीविता उभर कर सामने आ रही है। वहीं दूसरी तरफ कुछ असामाजिक तत्व अवैध लाभ भी उठा रहे है। निजी स्वार्थ के लिए आधुनिकता और विकास का इस्तेमाल कहां तक जायज है, मीडिया के लिए अभी भी ये एक उलझी हुई गांठ है। समाज का आयना कहीं जाने वाली मीडिया किस तरह की मिसाल कायम कर रही है ये किसी से छुपा नहीं है।

कभी पेड़ न्यूज के नाम पर तो कभी कार्यक्षेत्र और मीडिया आधिपत्य के नाम पर, देश की मीडिया के कार्यव्यवहार पर कई बार उंगलियां उठ चुकी हैं। लेकिन इस अनियमितता के लिए अकेले मीडिया को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। खबरों के उचित प्रचार प्रसार के लिए सुनियोजित अर्थव्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण विभाग है और मीडिया के लिए पूंजी का प्रबंध हमेशा से एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। इसी चुनौती को पूरा करने की होड़ में मीडिया कुछ उन्हीं गिने चुने हाथों में आ गिरी है जो इसको अपने निजी स्वार्थपरता को पूरा करने में इस्तेमाल कर रहे हैं।

तालाब में रहना है तो मगरमच्छ से दोस्ती करनी ही पडेगी। सोशल मीडिया के हालत भी कुछ ऐसी ही हो गई है। देश में हर तरफ विकास की एक लहर सी दौड़ रही है। हर क्षेत्र में सरकार पारदर्शी और

निष्पक्ष विकास के दावें कर रही है। भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया भर में सशक्त रूप से उभर रही है। दिन–प्रतिदिन मजबूत होती इस अर्थव्यवस्था में सोशल मीडिया के जरिए खडे किए गए विज्ञापन उद्योग के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता तो मीडिया आज पूंजीपतियों के हाथों की कठपुतली क्यों बन कर रह गई है। इतिहास साक्षी है कि जिस देश की सोशल मीडिया जितनी मजबूत और आत्मनिर्भर होती है। इस देश का भविष्य उतना ही उज्जवल होता है। लेकिन भारत में सोशल मीडिया और मीडियाकर्मी दोनों के ही भविष्य को दरकिनार करके संविधान के उस चौथे स्तंभ के अस्तित्व को खोखला करने की शुरूआत हो चुकी है। इससे पहले की धीरे–2 बढ़ती अराजकता हमारी व्यवस्था को पूर्ण रूप से निगल जाए। हमें आरोप प्रत्यारोप की राह छोड़कर कुछ सक्रिय कदम उठाने चाहिए। सिर्फ बातें ही नहीं समस्याओं का उचित हल भी खोजना चाहिए तभी साइनिंग इंडिया की चमक पूरी दूनिया को रोशन कर सकेगी।

अब हम यहाँ समाज पर होने वाले सोशल मीडिया के कुछ सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों का भी उल्लेख करेंगे।

सोशल मीडिया के समाज पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावः– किसी भी खोज या आविष्कार के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव समाज पर होते है। यहाँ पर सोशल मीडिया के भी दोनों तरह के प्रभाव समाज पर पड़े है। जिनका विवरण निम्न है।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का विस्तारः

सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने लोगों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए है। कभी कम्पयूटर या सोशल साइट्स से घबराने वाले उम्रदराज के लोग भी आज सोशल साइटस पर सक्रिय नजर आते है। इस माध्यम ने आज न केवल लोगों को अभिव्यक्ति की आजादी को नया आयाम दिया है। बल्कि देशों की भौगोलिक सीमाओं को भी अप्रासंगिक बना दिया है। साथ ही साथ इसने पीढ़ियों के अन्तर को भी दूर कर दिया है। आज प्रत्येक आयु वर्ग के लोग इस पर सक्रिय है एवं अपने विचारों को सांझा कर रहे है।

क्रांतिकारी विचारों का पोषकः

विचारों की दुनिया में क्रान्ति लाने वाला सोशल मीडिया एक ऐसा माध्यम है, जिसकी न तो कोई सीमाएं है, न कोई बन्धन। भारत सहित दुनिया के विभिन्न देशों में न सिर्फ वैयक्तिक स्तर पर बल्कि राजनैतिक दलों के साथ–साथ कई सामाजिक और गैर–सरकारी संगठन भी अपने अभियानों को मजबूती देने के लिए सोशल–मीडिया का बखूबी उपयोग कर रहे हैं। सोशल मीडिया सिर्फ अपना चेहरा दिखाने का माध्यम नहीं है, बल्कि इसने कई पंक्तियों व वैचारिक बहसों को भी रोचक मोड़ दिए हैं, जिन देशों में लोकतन्त्र का गला घोंटा जा रहा है वहाँ अपनी बात कहने के लिए लोगों ने सोशल मीडिया का लोकतान्त्रिकरण भी किया है।

जनसंचार का विस्तारः

अब यह साबित हो रहा है कि ''खबरें अब क्या रोकेगा? अब खुद ही अखबार है लोग'' यह पंक्ति सोशल मीडिया के परिदृश्य को पूरी तरह व्यक्त करती है, जो अभिव्यक्ति को स्वतंत्रता एवं इण्टरनेट आधारित तकनीक के गर्भ से निकला है। इस मीडिया ने मुख्य धारा की मीडिया के परिदृश्य को पूरी तरह से बदल कर रख दिया है। वैसे भी यह जगत परिवर्तनों का साक्षी रहा है और यह परिवर्तन संचार माध्यमों में भी तकनीक के रूप में समय–समय से आता रहा है। पर मीडिया में हुआ परिवर्तन अपने साथ ही बहुत बड़े परिवर्तन करने की शक्ति को भी साथ लाया है। इसकी कैमेस्ट्री में पूर्णतः लोकतन्त्र ही समाहित है, जहां इसने लोगों को लोगों से सांझा करने के असीमित मौके दिए है। इसे मुख्यधारा की मीडिया जैसे समाचार–पत्र, टेलीविजन चैनलों और रेडियों के एक तरफा संचार के विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। इसमें लोगों की

हिस्सेदारी पर मुख्यधारा की मीडिया के गेटकीपर की तरह कोई रोक नहीं है और न ही लोगों को इसके लिए भुगतान करने की जरूरत है।

नागरिक पत्रकारिता का एक मंचः

सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने वाला प्रत्येक व्यक्ति पत्रकार है, लेखक है और उसकी आवाज का अपना एक वजूद है। प्रत्येक व्यक्ति इसका अपने तरीके से प्रयोग करने के लिए स्वतंत्र है और यही वजह है कि आज आम आदमी सोशल मीडिया को अपना रहनुमा मानता है। यह आम लोगों का हथियार बनकर उभरा है। आखिर यही तो नागरिक पत्रकारिता को स्पष्ट करता है। आज सोशल मीडिया प्रत्येक व्यक्ति को नागरिक पत्रकारिता का कार्य करनेका दायित्व सौंप चुका है, चूंकि सोशल मीडिया में लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के आयाम दोनों समाहित हैं, जिससे इस मीडिया में संवादात्मक संवाद होता है। इस दायित्व का निर्वहन सोशल मीडिया से जुड़ा प्रत्येक जिम्मेदार नागरिक कुछ हद तक भली–भांति कर रहा है और मुख्यधारा की मीडिया उससे खबरें प्राप्त कर रही है। प्रतिदिन समाचार पत्रों में ट्विरटर व फेसबुक पर लिखी खबरें पढ़ने को मिलती है। इंटरनेट इस्तेमाल करने वालों की सक्रियता की वजह से यह सम्भव हुआ।

सुशासन का माध्यम

किसी भी देश को तरक्की की राह पर अगर तीव्र गति से चला है, तो उसे गवर्नेस में भी सूचना और तकनीक को अपनाना होगा। यानी ई–गवर्नेस से ही जनता से संवाद और सम्पर्क का सिलसिला जारी रह सकता है और ई–गवर्नेस का तब तक आम आदमी से जुड़ाव नहीं होगा, तब तक उसका पूरा फायदा नहीं मिलेगा और न ही सरकारी योजनाएं पूरी तरह अमल में आ पाएंगी। ई–गवर्नेस होने से बिना समय गवाएं लोगों की सेवाएँ प्राप्त करने में किसी तरह की दिक्क्त नहीं आएगी।

इसका एक बहुत बड़ा उदाहरण है बिहार, मध्य प्रदेश, जिसने तेजी से ई–गवर्नेस को अपनाया है ओर विकास की गति को एक नया आयाम दिया है। इसी अवधारणा को सोशल मीडिया ने विस्तार प्रदान किया है। आज भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सभी मन्त्री, राज्यों के मुख्यमन्त्रियों से लेकर मन्त्री एवं जिलों के जिलाधिकारी सोशल मीडिया से जुड़े हैं, जिससे उनका जनता से सीधा संवाद हो रहा है।

सोशल मीडिया के माध्यम से रोजगार

ट्विटर इण्डिया की तरह आज कई कम्पनियाँ सिर्फ सोशल मीडिया के जरिए प्रत्याशियों को खोज रही हैं। एक सर्वे के अनुसार, करीब 56: लोगों ने माना कि पिछले वर्ष जांच से जुड़े अवसर के लिए सोशल मीडिया के जरिए उनसे सम्पर्क किया गया। यहीं नहीं 25: लोगों ने कहा कि सोशल मीडिया के रास्ते ही उन्हें जॉब मिल भी गई। ''अब सूचना तकनीक और सोशल मीडिया से जुड़ी कई कम्पनियाँ सिर्फ सोशल मीडिया के मंचों के जरिए ही प्रत्याशी खोज रही है। उन्हें लगता है कि उन्हें इन मंचों के जरिए उपयुक्त प्रत्याशी कम वक्त में मिल जाएगा। इसके अलावा विज्ञापन का खर्च भी बचता है।''

विशेषकर महानगरों में सोशल मीडिया धीरे–धीरे कार्मिकों की भर्ती की प्रक्रिया को बदल रहा है। रोजगार की दुनिया को बदलने में सोशल मीडिया की भूमिका दो तरह से सामने आ रही है। एक तो प्रत्याशियों की खोज सोशल मीडिया के मंचों के जरिए हो रही है, तो दूसरी तरफ सोशल मीडिया खुद रोजगार सृजन भी कर रहा है।

नकारात्मक प्रभाव

जहाँ सोशल मीडिया के अनेकों सकारात्मक प्रभाव समाज पर पड़े हैं, तो वहीं अनेकों नकारात्मक प्रभाव भी उत्पन्न हुए हैं।

आतंकवाद का प्रचार

इण्टरनेट और फेसबुक जैसे सोशल मीडिया के चाहे जितने लाभ हों, उनसे आतंकवादियों के हाथ और लम्बे हो रहे हैं। अपनी पार्श्विक विचारधारा को प्रचार देने और अपनी कुत्सित योजनाओं को साकार करने का उनसे सहज व सस्ता उपाय उन्हें शायद ही कोई मिल सकता है। यहाँ तक कि अब संयुक्त इण्टरनेट और सोशल मीडिया की नकेल कसने के लिए किसी अन्तर्राष्ट्रीय समझौते की जरूरत करने लगा है।

अपराधों को बढ़ावा

जब फेसबुक जैसे बहुचर्चित व बहुप्रशासित माध्यम नहीं थे, तब अफवाहें फैलाने या अनर्गल प्रचार द्वारा लोगों को बहकाने में समय लगता था, अब सोशल मीडिया, इण्टरनेट फोरम या चैट रूम जैसी सुविधाओं के माध्यम से प्रत्येक उल्टी–सीधी बात का प्रचार करना, नए सदस्य या समर्थक जुटाना बाएँ हाथ का काम हो या है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में फेसबुक के साथ–साथ टिव्टर, यूट्यूब और फाइल–शेयरिंग सेवा 'रैपिडशेयर' की आलोचना की गई है। इस बात की भी आलोचना की गई है कि इण्टरनेट सर्च मशीनों के इण्डेक्स 'आतंकवादी विषय–वस्तुओं' की खोज की और भी आसान बना देते हैं।

शान्ति एवं सद्भाव पर संकट

सामाजिक जीवन में कम्पयूटर की उपयोगिता को लेकर किसी को कोई आपत्ति नहीं है। परेशानी इस बात की है कि कम्पयूटर का उपयोग समाज के हित में करने के साथ ही एक बड़ा वर्ग ऐसा भी है, जो कम्पयूटर का दुरुपयोग करके समाज को बिगाड़ रहा है। दुष्प्रचार कर रहा है। यह वर्ग समाज का वातावरण बिगाड़ने वाले स्वार्थी तत्वों, विकृत मानसिकता के लोगों का है। ये लोग कम्पयूटर की सोशल साइट्स पर झूठे तथ्य, गलत जानकारी, भड़काने वाले फोटो डालकर समाज का सद्भाव बिगाड़ रहे हैं। समाज के लोकप्रिय लोगों से लेकर धर्म, जाति तथा सम्प्रदाय तक प्रत्येक को विकृत मानसिकता के लोगों ने अपने निशाने पर ले लिया है। भद्दी भाषा, अश्लील दृश्य, गन्दे चुटकुलों की सोशल साइट्स पर संख्या बढ़ती जा रही है। सोशल साइट्स पर अपराधी, कट्टरपंथी विचारों से जुड़े लोग भी मनमानी बातें लिखकर दुष्प्रचार कर रहे हैं। झूठे दृश्यों के माध्यम से लोगों को सामाजिक एवं धार्मिक भावनाओं को भड़काया जा रहा है।

युवाओं को गुमराह कर रहा है सोशल मीडिया

सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से तमाम अश्लील सामग्री और भड़काऊ बातें भी लोगों तक प्रसारित की जा रही हैं, जोकि लोगों के मनोमस्तिष्क पर बुरा प्रभाव डालती है और जिनकी वजह से देश में दंगे–फसाद में वृद्धि हुई है। सोशल नेटवर्किंक साइट्स ने लोगों को वास्तविक जीवन को भुलाकर आभासी जीवन में रहने को मजबूर कर दिया है। सोशल साइट्स की आदत के कारण युवाओं में व्यक्तिगत संवाद की दिक्कत होती है, जिससे वे सामाजिक रूप से प्रभावी संवाद नहीं कर पाते हैं। इसके परिणामस्वरूप आज के युवा पीढ़ी में धैर्य की भारी कमी देखी जा सकती है।

युवावस्था एक ऐसी स्थिति होती है, जिसमें व्यक्ति को अपने उपदेश के बारे में नहीं पता होता और उसके कारण उससे गलत संगति में पड़ने में जरा–सा भी समय नहीं लगता। सोशल मीडिया के द्वारा युवाओं को पश्चिमी सभ्यता का अन्धाधुन्ध अनुसरण करना आधुनिकता का मापदण्ड लगने लगा है।

इससे हमारे देश के युवाओं की पूरी जीवन–शैली प्रभावित दिखलाई पड़ रही है, जिसमें रहन–सहन, खान–पान वेशभूषा और बोलचाल सभी समय रूप से शामिल है। मद्यपान और धूम्रपान उन्हें एक फैशन का ढंग लगने लगा है। नैतिक मूल्यों के हनन में ये कारण मुख्य रूप से हैं। आपसी रिश्ते–नातों में बढ़ती दूरियां और परिवारों में बिखराव की स्थिति इसके दुःखदायी परिणाम है।

मूल्यांकन

सोशल नेटवर्किंग साइट्स आज एक स्टेटस सिम्बल का प्रतीक बन चुकी है, जिनकी कुछ अच्छाइयाँ है, तो कुछ बुराइयाँ भी। इसे उपयोग करने वाले पर निर्भर करता है कि वह सोशल मीडिया से क्या

अपेक्षा रखता है? सोशल मीडिया सामाजिक भी बना सकता है और एकाकी भी। सोशल मीडिया पर अपने पुराने मित्रों के साथ तरोताजा हो सकते हैं, तो अनजाने लोगों के साथ धोखा भी खा सकते हैं।

सोशल मीडिया पर आप दुनिया को अपनी अच्छाइयों व रचनात्मकता से रू–ब–रू करा सकते हैं, तो दूसरों की बुराइयों को सीख भी सकते हैं। कोई भी माध्यम अच्छा या बुरा नहीं होता, बल्कि इसका प्रयोग करने वाले उसे अच्छा या बुरा बनाते हैं और यही बात सोशल मीडिया पर भी लागू होती है।

स्पष्ट है कि सोशल मीडिया सिर्फ चेहरा दिखाने का माध्यम नहीं, बल्कि लोगों को जोड़ने, यादों को सहेजने संवाद के माध्यम से प्रतिसंवाद, उनमें चेतना फैलाने व विमर्श पैदा करने एवं विभिन्न सरोकारों पर जीवन्त एवं अनन्त बहस का उत्कृष्ट माध्यम है। इस बात से भी दरकिनार नहीं किया जा सकता कि सोशल मीडिया पर आज जो कुछ दिखाया जा रहा है। वह अपनी वास्तविकता से काफी दूर है। यह सब उस कॉपी या प्रति के समान है। जिसकी प्रतियां बाजार में बेची जाती है। लेकिन उसकी कोई ऑरिजनल कॉपी होती ही नहीं है। सिर्फ नकली कॉपी की ही कॉपी को बाजार में बढ़ा चढ़ा कर बेचा जाता है। यही इस सोशल मीडिया की वास्तविकता है।

संदर्भ सूचीः

प्रभात रवीन्द्र (2014) पत्रकारिता टाइम्स (आम आदमी की नई ताकत बना सोशल मीडिया)
ओझा ए.के. (2015) ''भारतीय समाज एवं सामाजिक मुद्दे'' (अरिहन्त पब्लिकेशन मेरठ, यूपी)
कुशवाहा राहुल, डॉ. गांधी सुषमा (2018) ''समाज विकास में सोशल मीडिया की भूमिका : एक अध्ययन ।
अग्रवाल (2002) हैंडबुक ऑफ जर्नलिज्म एण्ड मास काम्यूनिकेशन पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली।
इंटरनेट लाइव स्टेटस की रिर्पोट
इंडिया टीवी समाचार पोर्टल
ऑनलाइन पत्रकारिता।

कुछ साइटसः

1- www.hi.wikipedia.org./wiki/
2. http://www.hansaresearch.com
3. http://www.indiannewspaper.society.org
4. kuk.ac.in